504

Dravya Puja ke Rahasya Par Vichar (In Jain Darshan, January 1937)

पुजा के रहरप

'दर्शन' के विगत अंक में 'हमारी द्रत्र्य पूजा का रहस्य' शीर्षक लेख प्रगट हुआ है। विद्वान् लेखक ने गंभोर अनुमनन के बाद वह लेख लिखा है, यह प्रसन्नता की बात है और इससे भी अधिक प्रसन्नता की बात तो यह है कि किसी विद्वानने द्रव्य पूजा जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अपनी गवेषणा पूर्ण दृष्टि तो डाली। क्योंकि वर्तमानका विद्वन्मंडल इससे प्रायः बंचित सा ही है। यही कारण है कि प्रतिदिन चिद्रानों को संख्या बुद्धि होने पर भी इस ओर किसी ने रहस्य-निर्णय की दृष्टि से अपनी लेखनी नहीं उठाई। इस विषय पर स्वतन्त्रता पूर्वक रहस्य के उद्घाटनार्थ प्रथमवार लेखनी उठानेक नाते लेखक बधाई के भी पात्र हैं। क्योंकि मैं ने जिज्ञासु भाव से अनेकों बार, अनेक उपाधि-धारो प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वानों से 'पूजन' का रहस्य जानना चाहा, पर कई विद्वानों से तो 'कुछ' मिलने के स्थान पर पेसे उत्तर मिले, कि जिन्हे सुनकर मेरे शोक का पारावार न रहा। अस्तु।

मैं यह लेख 'द्रव्य पूजा का रहस्य' को प्रगट करने के लिये नहीं लिख रहा हं, क्योंकि न तो इस समय मेरे पास समय है न अभी तक यथेष्ट सामग्री ही जुट सकी है । जिससे कि उस पर पूर्णतया प्रकाश डाल सकूं, और न लेखक के लेखकी समीचा ही इस लेख में कर रहा हूँ, किन्तु लेखक की जिस खास बात से मैं असहमत हं उस ओर दृष्टि डालना और 'द्रव्य पूजा के रहस्य' की और आबार्य परम्परा (हीरालाल जैन शास्त्री उज्जैन)

के ब्रानुसार संकेत करनाही मेरे इस ळेख का लक्ष्य है।

लेख प्रारम्भ करते हुए लेखकने द्वितीय पैराय्राफ के अन्त में लिखा है कि ''यह तो ध्यान में रखना ही चाहिये कि जो विचार युक्ति और अनुमव विरुद नहीं वे शास्त्र बाह्य नहीं कहे जा सकते हैं।" इस बात से में सहमत नहीं हूँ क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि विचार धारा या दृष्टि कोग दूसरी ओर होने के कारण शास्त्र बाह्य भी विचार युक्ति संगत षवं अन्भवानुमोदित से प्रतीत होने लगते हैं, पर यथार्थ में तो वे युत्तचाभास या अनुभवाभास ही सिद्ध होते हैं। इसका कोई यह अर्थ न समझे कि लेखक ने जो कुठ लिखा है, वह सब युक्त्याभास या अनुभवामास हो है। नहीं, लेखक की कुछ वातों की तो पृष्टि आगम से बहुत अच्छी तरह होती है। और इस लिये में उस बातको लेखक की मौलिक न मान कर युक्ति प्रस्सर लिखी हई ही मानता हूँ और इसी लिये सम्पादकीय नोट में सम्पादक का यह लिखना कि 'अष्ट द्रव्य को आहारदान का अनुकरण बताना एक अनोखी सुम है' ठीक नहीं है, क्योंकि स्वामी समन्तभद्र ने अपने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में स्पष्ट रूप से नित्य 'पूजन' को चेयावृत्य नामक शित्तावत में अन्तर्हित किया है। तद्यथा-

'देवाधिदेवचरणे, परिचरणं सर्वदुःखनिईरणम् । कामदुहि कामदाहिनि परिचिनुयादाइतो नित्यम् ॥११७ श्लोक के अन्त में प्रन्थकार ने 'नित्यम्' पद दे

कर तो स्पष्ट कप से 'नित्य पूजन' की ओर लक्ष्य

जैन दर्शन

[225]

श्रीमान्निर्वाणसम्पद्ररयुवतिकरालीढकण्ठः सुकण्ठे-देवेन्द्रैर्वन्द्यपादो जयति जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूजः ॥

यह बात दूसरी है कि हम स्वेच्छ्या वैसे अर्थ को मान लेवें। किन्तु उपलब्ध आगमों से तो उस कल्पना की षुष्टि होती नहीं है। जहां तक मैं समम्भ सका हूं, आह्वानन आदि तीनों कियाओं का अर्थ कुक और ही रहा है और कालमेद से या मूलपर-म्परा के छिन्न भिन्न हो जाने और नाना परम्पराओं के उत्पन्न हो जाने से आज प्रचलित रूप दिखाई पड़ रहा है। यथार्थ में कई परम्पराओं का भिन्न रूप हमें इस वर्तमान की पूजन पद्धति में दृष्टिगोचर होता है, देखिये, उपलब्ध आगमों में हमें तीन परम्पराओं के दर्शन होते हैं:---

१— स्वामी समन्तभद्र तो नित्य पूजन को चतुर्थ शित्ताव्रत में व्रहण करते हैं। यह बात ऊपर दिखाई जा चुकी है।

२-सोमदेव सूरि झपने प्रसिद्ध यशस्तिलकचम्पू प्रन्थ के भीतर, 'नित्य पूजन' को 'सामायिक' नामक प्रथम शित्ताव्रत में प्रगट करते हैं। बल्कि उन्होंने तो देवोपासना को ही सामायिक शित्ताव्रत स्वीकार किया है। प्रन्थ सामने न होने से मैं उद्धरण देने में विवश हूं। जो देखना चाहें, वे यशस्तिलकचम्पू के उत्तरार्ध में द्वादश व्रतों के वर्णन को देखें। इस पर-म्परा का आभास वर्तमान में हमें आह्वानन आदि तथा कायोत्सर्ग आदि के रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। साथ ही कुछ सामायिक पाठ भी पेसे मिलते हैं, जिनमें देव पूजा को तदन्तर्गत देखा जाता है क्योंकि दश मक्तियों में से अरहंत मक्ति को प्रथम स्थान दिया गया है। और मक्तियां सामायिक व्रत के अन्तर्गत हैं यह बात उपलब्ध सामायिक पाठों के देखने से विदित होती है। भिन्न २ सामायिक पाठों के निर्माता आचार्य भी भिन्न भिन्न ही रहे हैं इस लिये यह परम्परा भी अनेक आचार्यों से अनुमो-दित रही है ऐसा समफना चाहिये।

३ - कुछ आचार्यों ने साधुओं के समान गृहस्थों के भी छह आवश्यक बताये हैं, जो कि प्रति दिन किये जाते हैं। उनमें देव पूजा को प्रथम या मुख्य स्थान दिया गया है। जैसे--

देवपूजा गुरूपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः । दानञ्चेति गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने दिने ॥

उक्त परम्पराओं के अनुसार द्रव्य पूजाके क्या २ रूप रहे हैं, यह अभी तक अविदित है । हां, द्वितीय परम्परा का स्पष्ट रूप यशस्तिलकचम्पू में उल्लिखित है । परन्तु यदि छान-बीन को जाय, तो भिन्न २ पर-म्पराओं के भिन्न २ रूपों का हमें दर्शन हो सकता है, पर छान-बीन करे कौन ? यह विकट प्रश्न खड़ा होता है ।

हमारे दुर्भाग्य से प्रति वर्ष धर्म के नाम पर समाज लाखों रुपया खर्च करती है। पर एक पेसा सरस्वती भवन कि जहां समस्त प्रकार के प्रन्य उपलब्ध हां, और जहां पर वैठ कर अपनी आजीविका से निश्चिन्त होकर कई विद्वान एक साथ गंभीर तत्वों की खोज कर सकें, आज तक भी समाज नहीं बना सकी है। यदि समाज चाहे तो किसीभी प्रसिद्ध सरस्वती भवन के साथ पेसी योजना की जा सकती है, और वह बहुत शीव्र सफल हो सकती है। विद्व-न्मंडल खास कर पुरातत्वान्वेषो वर्ग एक लम्बे समय से पेसी संस्था की आवश्यकता अनुभव कर रहा है,

द्रव्य पूजा के रहस्य पर विचार

पर देखें वहदिन कव नसीब होता है ! (इत्यप्रास-ाङ्गकम्)

पूजा पद्धति सम्बन्धी खोज करने पर पता चलता है कि पहिले तदाकार स्थापना रूप पूजन और अतदाकार स्थापना रूप पूजन ऐसी दो पद्धतियां प्रचलित थीं। ये दोनों परिपाटियां इतनी अधिक ब्यापक थीं कि उन्होंने जैनतर धर्मों पर भी अपना प्रभाव डाला है, जिसका कि आभास हमें उनके यहां वतलाई हुई सगुग पूजा और निगुंण पूजा से मिलता है।

निराकार पूजा में आह्वानन, स्थापन, सन्निधी-करण और विसर्जन की किया की जाती रही है, ऐसा प्रतीत होता है और वह युक्तियुक्त भी जंचती हे क्योंकि:-

पूजक के सामने जब तक कोई आदर्श उपस्थित न हो तब तक यह उसको पूजा कैसे कर सकता है। अतपद्य प्रतिमा (तदाकार म्रूति) के अभाव में यह आवश्यक है कि कोई न कोई आलम्बन बनाया जाय और उसके लिये पुष्पों में स्थापना तथा आह्वानन आदिकी विधि बतलाई गई। जब याह्वानन किया गया पुष्पों में स्थापना कोगई तो उन पुष्पों के इधर उधर पड़ जाने से अविनय न हो-इसलिये उस स्था-पना का विसर्जन करना भी आवश्यक होगया और इस प्रकार दक पूजन सामान्य के लिये आरम्भ में आह्वानन आदि तान कार्थ और अन्तमें विसर्जन ऐसे

मिलकर पूरे पंच अंग तैयार होगये। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि आह्वाननादिक, निराकार पूजनके भ्वंसावग्रेष हैं। किन्तु --

तदाकार पूजनमें तो उनकी आंवश्यकता ही नहीं है और न पूर्श्कालमें भी रही है—ऐसा आगमाभ्यास से पता चलता है। इस बातको पुष्टिके लिये आगम प्रमाण मिले हैं; वे इस प्रकार हैं—

> साकारादिनिराकारा, स्थापना द्विविधा मता। अत्ततादिर्ज़राकारा, साकारा प्रतिमादिषु॥ आह्वानं प्रतिष्ठानं, सन्निधीकरणं तथा। पूजा विसर्जनं चेति, निराकारे भवेदिति॥ साकारे जिन बिभ्वे स्यादेक प्योपचारकः। सचाष्टविध प्योक्तं जलगन्धान्नतादिभिः॥३॥ प्रतिष्ठादीपक नामकरग्रामध्ये

भ्रान्तिम श्लोकमें पठित दो-दो पवकार इस बात को स्पष्ट घोषित करते हैं कि यही साकार या निरा-कार पूजनकी पद्धति रही है। किन्तु कालदोष से मूल परम्परा नष्ट होगई है और खिचड़ी रूप दर्षिगोचर हो रहा है।

इन दोनों प्रकारकी पूजनों का स्पष्टतया लगभग इसी प्रकारका उब्लेख यशस्तिलक तथा अन्य प्रन्थोंमें भी उपलञ्ध है पर प्रन्थ सामने न होने से प्रमाण देने में विवश हूं। शेष बातों पर फिर कभी प्रकाश डाला जायगा। आशा है हमारे विद्वान पाठक द्रव्यपूजनके रहस्य पर अपने २ विचार प्रगट करेंगे।



[२२६]

बनायमने रहरा पर निकार

'र्शन ' ने निगत अन में 'रमारी इन्म प्रजापा एकन ' क्री के तेरन प्रगर हुआ है। विश्वन लेखन में गोरि अनुमतन के कार यह लोग दिन्हा हे. यह जान कता की नाम टें और इसके भी अनिक कार यह लोग दी नाम ते नह है ' के किसी विश्वन ने प्रथा प्रजा भी क्रांक्रिय आप आप जोक्ता-मन प्रण द्रविद तो उग्ती । क्रोंग कि तार्मिंग का विद्वान्तें उत उसमें प्राया: वाचिन का ही है । यही कारण है कि मोनिएन वा विद्वानें उत उसमें प्राया: वाचिन का ही है। यही कारण है कि मोनिएन वा विद्वानें उत उसमें प्राया: वाचिन का ही है। यही कारण है कि मोनिएन विश्वनें की कार्या-टा है हो ने पाभी इस ओर किसी ने राष्ट्रम कि प्रायत की कार्या कान्य-टा है हो ने पाभी इस ओर किसी ने राष्ट्रम के उस्ता-टा की विद्वनी नहीं उठाई । इस पर दमत जाता प्रथंक रहरम के उद्या-टा कर मिल्लानी राधा हो रहन के का तो के तो बाद क्रांड के भी-पान है ' वयेग कि मंत्री जिन्नाम भाव से उननेको कार, अनेक-आफि-पारी प्रायत्व अविह विक्रो के ' इन्ते ' का नहहन जाता-काहा. जा उन्ने कर्दावहातों की तो 'कुस' जितनके के स्थित नर हे से उत्या कि तो कि दे के उस्ता की 'कुस' जितनके के स्थान नर हे से उत्या कि ' कि कि को जाता का का राष्ट्र ! अर्ज !

लिव हा हूं नमां के तो उहा हातम मेरे पश्त काम हे न उभी जर-रमे सा अभ्यतिग्रिय सभी हैं. जिसते कि उस पर व्यतिया अमारा उभा सर्व, म उमेर न ले एक मे लोए की राभी पता ही उस लोग में नर रहा मूं, किन्तु लेएक ही जिम खास कान में में अयहत्तन रू उस कोर कवि जानना उमेर ' प्रयत् इजा में हरूले में उमेर आनमा जाम जामारा के अनुसार समेल भाग ही मोरे इहले ज का दनक्षम है।

लेख करेन काते हुए रोज्स ने दितीय पेरा 20 द के जल मेलिल है कि 40 यह तो कर को देशक ही नगाहिए कि जो बिनार युक्ति कोर अनुभव बित्द नहीं, वे शाला ना कही महे जाएकते हैं। " श कात से में तहका नहीं हूं रेशों कि भी क्यो ऐका रोता है कि बिनार का वा दीह कोरा यूक्री कार तो के कारण हगाला नाम भी बिनार द किस जात हम अनुभवा दु को दिन के कारण हगाला नाम भी बिनार द किस जात हम अनुभवा दु को दिन के कारण हो ति कारो हैं - पर यहा म में तो के मुक्ता भाव का की का राते ही कि दु रोने हैं। इलका केई भार जा का कर कि टोल्क मेजे दु का कि ला

2

काम सुदि साम दाहिति परिसित मारा रहे तो लियम गा राष्ट्र श्रेनेस आता में अन्यकार ते ' तित्यम ' पर दिखतो स्वच्छा त्य से ' ते स इन्हत' की ओर सहस किमा है ओर ' परिसित कान ' पर को ने वित एप महात्वीका र ही प्रता पर मा दिन कान ' पर को ने वित एप महात्वीका र ही प्रता ' पर भाव प्रजा का ग्रोतक दे से का दिमा है ' ' आरा मा ' पर भाव प्रजा का ग्रोतक हैं 1 मत भरे के बा मा रिजा ता है कि आहो ही र हो को आहार रात का अनुकाछ नहीं जात तक्ती को मी उ तार में जुख्य आहर का आहार में और महत्वा जा हका तरी है (

N तत्माभगेरम अब ७ देम देश।

हरितमिष्मात निष्माते स्निद्धारम्प्राणात्वर्णाते । देनावरसस्मिते योतीन्द्रण पंच मध्यते ॥ २ हन्न्स्णुक्षाव्याण्य स्वरे १२१॥ मा मारिको कि के आगि में दिन्हर्सविभातनो को मद-आदि को मि बात को का हो मकला है कि उगरार रात का श्रे तुम अभ भेरे ले ही . तो राटके उत्तर में कि उगरार रात का श्रे तुम रो गई है कि उगरिक में गिरवायत को उग्रमार के पिरी उगराम दो गई है कि उगरिक में गिरवायत को उग्रमार के लिए है . वातिरिन मा काद जिल्ह भी हो करते की आतारित रात म के गित-उन प्रतिदिवस्त उत्तव्यकी महि , उत्ते प्रतिदित रात म का -उगरार ही है . उत्तिक्त भी हो करते का प्रतिदेत रात म का -श्रित का का रात्र की म की ज्योति का रात्र के प्रतान अगरार ही ही . उत्तिक्त का प्रतिद्व रात्र मा का स्तुर श्रेत का का रात्र का के भी-अभी कि क्रिया का जा स्तुर उत्ते उक्त बताया है । जो के

' आनेहितंकिभगी नाम नारता गगाल कव्याणिज्जाण अल -आणाईण द्व्याणे देखभात सद्दा तक रक्षां जुन प्रशय मतिष्ट आयाणुआह भत्तीष्ट बुद्दीए र्तजयाण दार्षा ॥

.

उलाउमा द्यात् १९२१ तेन्द्र तन्द्रधामा १४ इम्मा एक्ट्र होती हे-" आकि प्रिया विभागते काल न्याया गर्जा ज स्टब्स या मजनत-पाका दीनां देश का ल्या हा त्या प्रकार आ-का जुगू दुक्का रायते भी दाता ा।

र्यम एजन में शनित कार्थ के गाना हिए मा आस्ति-प्रसाध ? रह का त का कियम भी- उनसिफि कंकितमा शिकान के उन्ति को हे अक्षेत्रिती रेज्या हैं र गते कि जा नियासन - जा भी शिका के उन्तरहित्र हैं के गा अनसे का ने को में -क कित फिलान क्य सचिन निम्कान यह सो माभित सिमा ह तो स्वम किन्ता क्य सक्ता वीन से दे उनन से माभ हो कारी-ह ने आहा , मर जाना को के विक्रम से वास है अल मही खेउन

द्रीष्ठ भी द्रभ्ती कार जो कि आपति जनमात है के हे नहरें- आहानत आदि पर अपने मोलिस सिकार । - प्रताप किर्मि वक्तिन में स्वारी माम्यामिन परित का रा किर्मु द्रेप इजान के कारणी अहिन मा किहरजन के किन गक र आहातन के आहा रहनेक के किस्त नहिन पर तर स्वार आहातन के आहा रहनेक के किस्त नहिन पर तर स्वार रें (जोरे कि — तीन स<u>ित गर्था</u> (मक्र ज तुरुट कं पा पराक्ताय र ती तो के पाका क की में. इस अगर दि <u>क पति क राज्य</u> र ती भी मालि<u>का का राज्य र पुगति क राज्य कि करक</u> दे के रे के स्वायों जागति जिठ पति <u>आव के लाग्य वज्ञा</u> । यह कोठ यू सरी हैं कि हार स्वेक्य्यमा दे से उपल भी मान रते थे । पह कोठ यू सरी हैं कि हार स्वेक्य्यमा दे से उपल भी मान रते थे । कि तु उग्राम उपल स्मर आगागों से तो उस भरजना भी प्री रहे ते म न ही हैं। जहां तम मुलिगफ लम्मा हूँ आहात्तन आदि तीने कि मा-ठते क उम्ब मुगर और रहा है और भाव भेर से या मेर ब साम का से चिला नगाना हो जाते के जो (कान भर से या नरेक स्तान प् का से सिला नगाना हो जाते के जो (कान भर से या नरेक स्तान – को के उस कार्य जो मिला हो का के उन्ते प्रतान की में उलका – हो जाते में - जान माला रिला दूल दि यह एहा है । यहा का में की वर्राक्त की मालित दूल दि यह पत् रहा है । के की का प्रतान होता है । देशि हा ह उन्तान की हजा पहाले के दाहि जो का दिता है । देशि का उस कार्य के राज्य की कार्य प्रतान के दाहि जो का सिला होता है । देशि हा का कार्य के कार्य होता के दाहि जो कार होता है । देशि का राज्य कार्य के राज्य का के राज्य के राज्य के राज्य कार्य के स्वान कार्य के साम कार्य के लिया कार्य के साम कि कार्य के ताला का का के राज्य का साम कार्य के कार्य के साम कार्य के साम कि कार्य के राज्य के राज्य के राज्य के राज्य के साम कि कार्य के राज्य के राज्य कार्य के राज्य कार्य के राज्य कार्य के राज्य का के राज्य के राज्य कार्य के राज्य के राज्य के राज्य के राज्य कार्य कार्य के राज्य के राज्य के राज्य का का त्या का राज्य का राज्य के राज्य का राज्य कार के राज्य का ती त्या के राज्य का राज्य का राज्य कार कार्य राज्य के राज्य का ती त्या के राज्य का राज्य कार्य का राज्य का राज्य का राज्य का राज्य का राज्य का राज्य कार्य का राज्य का राज्य का राज्य का राज्य का राज्य का राज्य का

8

(1) स्नामी तमक भड़ते कित्य इजने - क्य छिश्के उन में ज्ञस्टा भारे हैं। मह बात द्वत्र दिलईजानुदी हैं (

W

(3) दुन्ध आन्मार्भे ते लग्दु आे लगान ग्रहम्में के भी-यह आमध्यम ब लमे हैं जो कि प्रतिदिन कि के जाने हैं। उनमें रोव रूजा- को उभाम या साउन ह्या म निया जया हैं। मेरे-देव रूजा- भुग्र जानिका स्वास्काया, तंयप्रस्तका)

מההבלוום אצריו הי ות ההרמדת א ועא וו

उत्तनाभगों के उन्नाहार द्वर्म प्रज्ञा मेर नम्ना रेष (हे टें. न उत्तनी सक आर्थायत है। हो, किरीम परिस पर का साहर रख नराफित जिन्हा न शालतन्ति हो ते नाज र रखें का टर्फे -वर्षित हो लिका है। वर प्राज्ञ- की करे क्षेत्र का कर हो का जाया, तो फिला २ अफिर को करे की का र र र ने की जाया, तो फिला २ अफिर को करे की का र र र न की जाया, तो फिला २ अफिर की कर की का का र र र की जाया, तो फिला २ अफिर की कर की का का र र र की जाया, तो फिला २ अफिर की कर की का का र की लाया हो फिला है। वर प्राज्ञ- की करे की का र र र न का होता है। इसार इस प्राज्य के प्रतिबध का कि का का र कारो समया स्वर्जनती है। वर प्राज्य के प्रतिबध का कि का का र कारो समया स्वर्जनती है। वर प्राज्य के प्रतिबध का कि का का र कारो समया स्वर्जनती है। है कि के के हिन कर का तर की का का तरहा जिल्ला उकार के युक्त कर तकों ', आउज तक भी तही बजा तकी है। यदि तकज काहे, तो किसीमी उफ़िइ-दारका से अवती है। यदि तकज काहे, तो किसीमी उफ़िइ-दारका से अवते है। यदि तकज काहे, तो किसीमी उफ़िइ-दारका से अवते ही हा र की तकती है। विद्यान कर तका के तका हो हो का की कि कर तका र ति के र रायका का का र ती जा करती है। यदि तका के र के र रायका के तका की कि का की ही जा करती है। का कर का र रायका का का की की का कर तका ही ता कर की का र रायका का की आवत्य का उसी प्रात्य का र तका ही का कर कर तका की आवत्य का उसी का र र तका र र तका हि कर कि का कर तकी होता है। ए (इत्यजाराहि कर)

इजा पद्वारी तल्बन्भी रंगेज स्रोते में पला मलाग

हैं भि पहले त्रस्ताकार हफाफना रख रजन आँ अन्तराकार त्या पत्रा रजन ऐसी दो प्रद्वतिया मनात्मित थी। ये-देनों परिपार्टिया उत्तरी उत्तिर त्या प्रत्या है अहेते सेने-तर स्वले ज भी अपना माराज उत्तर हैं. जिल्हा हि उत्ता कहों उन्हें मुठा ब्लालाउ हुई स्तुरा रजा और -तिर्जु का रज्ज में जिल्ला है

निराकार जिनमें आहारत, स्थावन, मनिष्यी नेका को विकर्मि की किया की जाती हरिट . ऐका क्रोल होता हिं जो वह मुन्द्रि के को के क्राल मिल में मार के माल को दिवार में उनस्थित क हो तय तक के क मुट किमी रजा का लिक तो दिवार में उनस्थित क हो तय का राज की क उन्ने किमी रजा का लिक तो दिवार की उजार कर का जान ना उने (उसके लिए लोको के स्वान तक त्यादा का उपदि सी-तिर्वि आत्म के प्राईग के स्वान तक उपदि की स्वान क ति गरी, तो उन खिलों के स्वान त्यादा का जाने के उन्हा के स्वान क नी गरी, तो उन खिलों के स्वान उपदार प्राईग की स्वान क नी गरी, तो उन खिलों के स्वान उपदार प्राईग की स्वान क नी गरी, तो उन खिलों के स्वान उपदार प्राईग की स्वान क नी गरी, तो उन खिलों के स्वान उपदार प्राईग की स्वान क नी गरी, तो उन खिलों के स्वान उनसार प्राहम की उन्ने के उनसान की राज कि उन्न स्वान क का का विहान की मिल का उनसान होगान को एस समय प्राह का जान के लिए उनाए कि उनसान का उन्ने दि स्वान का रहा हो जान के स्वान कि का स्वान कि होता है कि उनहान का रेक, कि का रहा राज के स्वान क राज से 1 कि उन्हान का रेक, कि का स्वान का राज का स्वान स्वान राज है 1 कि उन्हान का स्वान का स्वान का स्वान का राज का स्वान स्वान राज है 1 कि उन्हान का स्वान का स्वान का स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान का स्वान स्वान स्वान स्वान का स्वान का स्वान स्वान स्वान स्वान का स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान का स्वान का स्वान स्

15

तिमार्ग्स् कार्ग के 35 भी आज १मकत ही नही है। -अंग् न इस्क्रिलि भी- रही हैं- देता मारित आगाम्यान क अग्रान खेवा हैं प् निश्च के लिख द्वाग्रा जिल्ली खेली है भि 2म अलकी हरिहर के लिख द्वाग्रा जनाण कि मेहे - मे रात्र जकार है : ---

भाकारादि निराकरा, सामना दिनिका मता । 3-इत्तारि निराकरा लकारा जारमा देखे ॥॥ आहान प्रतिस्तार , दिनाकरि जारिग्ता देखे ॥॥ एका बिह्नति नेति, हिराकरि नवेदिनि ॥२॥ फाकारे जिनविने खा हेक ह्वोपकार् । द नास्ट किप्ट ह्वोत्तं जस्मान्याह्ततादीनः ।आ अविद्यादीयक्त जाम्म हामन्ये ।

अकिस रुग्ते भी देता दे के ज्य सार रहा का के मी-स्मित्य स्वीरित मही है कि मही काम्य मा किराकार इनक भीपदाति रही है कि मही काम्य में किराकार इनक भीपदाति रही है कि मही काम्य रोटिंग मुख्या महत रागरे डोरे दिमगडी क्य संस्थित्ये मा के जिल्हा है (9 क रन के जिल्हा की इम्रो का स्मयत्य का क्री का गण-राजी अक्यू का उत्ते द मा जिल्हा त्य आ म्ह ज्यो में भी-उत्त जिल्हा का उत्ते द मा जिल्हा त्य आ म्ह ज्यो में भी-उत्त ज्य की इम्रो की हो के जाम हो कि विलाह है ...